# पञ्चमोऽध्यायः

## देवताओंद्वारा देवीकी स्तुति, चण्ड-मुण्डके मुखसे अम्बिकाके रूपकी प्रशंसा सुनकर शुम्भका उनके पास दूत भेजना और दूतका निराश लौटना

### विनियोगः

**ॐ अस्य श्रीउत्तरचरित्रस्य रुद्र ऋषिः, महासरस्वती देवता, अनुष्टुप् छन्दः, भीमा शक्तिः, भ्रामरी बीजम्, सूर्यस्तत्त्वम्, सामवेदः स्वरूपम्, महासरस्वतीप्रीत्यर्थे उत्तरचरित्रपाठे विनियोगः।**

### ध्यानम्

**ॐ घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं**
**हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।**
**गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-**
**पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्॥**

*'ॐ क्लीं' ऋषिरुवाच॥ १॥*

**पुरा शुम्भनिशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शचीपतेः।**

---

ॐ इस उत्तरचरित्रके रुद्र ऋषि हैं, महासरस्वती देवता हैं, अनुष्टुप् छन्द है, भीमा शक्ति है, भ्रामरी बीज है, सूर्य तत्त्व है और सामवेद स्वरूप है। महासरस्वतीकी प्रसन्नताके लिये उत्तरचरित्रके पाठमें इसका विनियोग किया जाता है।

जो अपने करकमलोंमें घण्टा, शूल, हल, शंख, मूसल, चक्र, धनुष और बाण धारण करती हैं, शरद्ऋतुके शोभासम्पन्न चन्द्रमाके समान जिनकी मनोहर कान्ति है, जो तीनों लोकोंकी आधारभूता और शुम्भ आदि दैत्योंका नाश करनेवाली हैं तथा गौरीके शरीरसे जिनका प्राकट्य हुआ है, उन महासरस्वतीदेवीका मैं निरन्तर भजन करता हूँ।

**ऋषि कहते हैं**—॥ १॥ पूर्वकालमें शुम्भ और निशुम्भ नामक असुरोंने

**त्रैलोक्यं यज्ञभागाश्च हृता मदबलाश्रयात्॥ २॥**
**तावेव सूर्यतां तद्वदधिकारं तथैन्दवम्।**
**कौबेरमथ याम्यं च चक्राते वरुणस्य च॥ ३॥**
**तावेव पवनर्द्धिं च चक्रतुर्वह्निकर्म च*।**
**ततो देवा विनिर्धूता भ्रष्टराज्याः पराजिताः॥ ४॥**
**हृताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः।**
**महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्यपराजिताम्॥ ५॥**
**तयास्माकं वरो दत्तो यथाऽऽपत्सु स्मृताखिलाः।**
**भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः॥ ६॥**
**इति कृत्वा मतिं देवा हिमवन्तं नगेश्वरम्।**
**जग्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः॥ ७॥**

*देवा ऊचुः॥ ८॥*

**नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।**

---

अपने बलके घमंडमें आकर शचीपति इन्द्रके हाथसे तीनों लोकोंका राज्य और यज्ञभाग छीन लिये॥ २॥ वे ही दोनों सूर्य, चन्द्रमा, कुबेर, यम और वरुणके अधिकारका भी उपयोग करने लगे। वायु और अग्निका कार्य भी वे ही करने लगे। उन दोनोंने सब देवताओंको अपमानित, राज्यभ्रष्ट, पराजित तथा अधिकारहीन करके स्वर्गसे निकाल दिया। उन दोनों महान् असुरोंसे तिरस्कृत देवताओंने अपराजितादेवीका स्मरण किया और सोचा—'जगदम्बाने हम-लोगोंको वर दिया था कि आपत्तिकालमें स्मरण करनेपर मैं तुम्हारी सब आपत्तियोंका तत्काल नाश कर दूँगी'॥ ३—६॥ यह विचारकर देवता गिरिराज हिमालयपर गये और वहाँ भगवती विष्णुमायाकी स्तुति करने लगे॥ ७॥

**देवता बोले**—॥ ८॥ देवीको नमस्कार है, महादेवी शिवाको सर्वदा

---

* किसी-किसी प्रतिमें इसके बाद 'अन्येषां चाधिकारान् स स्वयमेवाधितिष्ठति' इतना पाठ अधिक है।

**नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥ ९ ॥**
**रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।**
**ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः॥ १० ॥**
**कल्याण्यै प्रणतां* वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः।**
**नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः॥ ११ ॥**
**दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै।**
**ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः॥ १२ ॥**
**अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः।**
**नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः॥ १३ ॥**
**या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता।**
**नमस्तस्यै॥१४॥ नमस्तस्यै॥१५॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ १६ ॥**

नमस्कार है। प्रकृति एवं भद्राको प्रणाम है। हमलोग नियमपूर्वक जगदम्बाको नमस्कार करते हैं॥ ९ ॥ रौद्राको नमस्कार है। नित्या, गौरी एवं धात्रीको बारंबार नमस्कार है। ज्योत्स्नामयी, चन्द्ररूपिणी एवं सुखस्वरूपा देवीको सतत प्रणाम है॥ १० ॥ शरणागतोंका कल्याण करनेवाली वृद्धि एवं सिद्धिरूपा देवीको हम बारंबार नमस्कार करते हैं। नैर्ऋती (राक्षसोंकी लक्ष्मी), राजाओंकी लक्ष्मी तथा शर्वाणी (शिवपत्नी)-स्वरूपा आप जगदम्बाको बार-बार नमस्कार है॥ ११ ॥ दुर्गा, दुर्गपारा (दुर्गम संकटसे पार उतारनेवाली), सारा (सबकी सारभूता), सर्वकारिणी, ख्याति, कृष्णा और धूम्रादेवीको सर्वदा नमस्कार है॥ १२ ॥ अत्यन्त सौम्य तथा अत्यन्त रौद्ररूपा देवीको हम नमस्कार करते हैं, उन्हें हमारा बारंबार प्रणाम है। जगत्की आधारभूता कृतिदेवीको बारंबार नमस्कार है॥ १३ ॥ जो देवी सब प्राणियोंमें विष्णुमायाके नामसे कही जाती हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है॥ १४—१६ ॥

* वृद्ध्यै सिद्ध्यै च प्रणतां देवीं प्रति नमः नतिं कुर्म इत्यन्वयः। यद् वा प्रणमन्तीति प्रणन्तः, तेषां प्रणतामिति षष्ठीबहुवचनान्तं बोध्यम्। इति शान्तनव्यां टीकायां स्पष्टम्, 'प्रणताः' इति पाठान्तरम्।

**या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते।**
**नमस्तस्यै॥ १७॥ नमस्तस्यै॥ १८॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ १९॥**
**या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।**
**नमस्तस्यै॥ २०॥ नमस्तस्यै॥ २१॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ २२॥**
**या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता।**
**नमस्तस्यै॥ २३॥ नमस्तस्यै॥ २४॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ २५॥**
**या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता।**
**नमस्तस्यै॥ २६॥ नमस्तस्यै॥ २७॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ २८॥**
**या देवी सर्वभूतेषुच्छायारूपेण संस्थिता।**
**नमस्तस्यै॥ २९॥ नमस्तस्यै॥ ३०॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ ३१॥**
**या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।**
**नमस्तस्यै॥ ३२॥ नमस्तस्यै॥ ३३॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ ३४॥**
**या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता।**
**नमस्तस्यै॥ ३५॥ नमस्तस्यै॥ ३६॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ ३७॥**

---

जो देवी सब प्राणियोंमें चेतना कहलाती हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है॥ १७—१९॥ जो देवी सब प्राणियोंमें बुद्धिरूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है॥ २०—२२॥ जो देवी सब प्राणियोंमें निद्रारूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है॥ २३—२५॥ जो देवी सब प्राणियोंमें क्षुधारूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है॥ २६—२८॥ जो देवी सब प्राणियोंमें छायारूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है॥ २९—३१॥ जो देवी सब प्राणियोंमें शक्तिरूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है॥ ३२—३४॥ जो देवी सब प्राणियोंमें तृष्णारूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है॥ ३५—३७॥

**या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता।**
**नमस्तस्यै॥ ३८॥ नमस्तस्यै॥ ३९॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ ४०॥**
**या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता।**
**नमस्तस्यै॥ ४१॥ नमस्तस्यै॥ ४२॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ ४३॥**
**या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता।**
**नमस्तस्यै॥ ४४॥ नमस्तस्यै॥ ४५॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ ४६॥**
**या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता।**
**नमस्तस्यै॥ ४७॥ नमस्तस्यै॥ ४८॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ ४९॥**
**या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता।**
**नमस्तस्यै॥ ५०॥ नमस्तस्यै॥ ५१॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ ५२॥**
**या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता।**
**नमस्तस्यै॥ ५३॥ नमस्तस्यै॥ ५४॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ ५५॥**
**या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।**
**नमस्तस्यै॥ ५६॥ नमस्तस्यै॥ ५७॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ ५८॥**

---

जो देवी सब प्राणियोंमें क्षान्ति (क्षमा)-रूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है॥ ३८—४०॥ जो देवी सब प्राणियोंमें जातिरूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है॥ ४१—४३॥ जो देवी सब प्राणियोंमें लज्जारूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है॥ ४४—४६॥ जो देवी सब प्राणियोंमें शान्तिरूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है॥ ४७—४९॥ जो देवी सब प्राणियोंमें श्रद्धारूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है॥ ५०—५२॥ जो देवी सब प्राणियोंमें कान्तिरूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है॥ ५३—५५॥ जो देवी सब प्राणियोंमें लक्ष्मीरूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है॥ ५६—५८॥

**या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता।**
**नमस्तस्यै॥ ५९॥ नमस्तस्यै॥ ६०॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ ६१॥**
**या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता।**
**नमस्तस्यै॥ ६२॥ नमस्तस्यै॥ ६३॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ ६४॥**
**या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता।**
**नमस्तस्यै॥ ६५॥ नमस्तस्यै॥ ६६॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ ६७॥**
**या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता।**
**नमस्तस्यै॥ ६८॥ नमस्तस्यै॥ ६९॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ ७०॥**
**या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।**
**नमस्तस्यै॥ ७१॥ नमस्तस्यै॥ ७२॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ ७३॥**
**या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता।**
**नमस्तस्यै॥ ७४॥ नमस्तस्यै॥ ७५॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ ७६॥**
**इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।**
**भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः॥ ७७॥**

---

जो देवी सब प्राणियोंमें वृत्तिरूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है॥ ५९—६१॥ जो देवी सब प्राणियोंमें स्मृतिरूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है॥ ६२—६४॥ जो देवी सब प्राणियोंमें दयारूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है॥ ६५—६७॥ जो देवी सब प्राणियोंमें तुष्टिरूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है॥ ६८—७०॥ जो देवी सब प्राणियोंमें मातारूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है॥ ७१—७३॥ जो देवी सब प्राणियोंमें भ्रान्तिरूपसे स्थित हैं,उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है॥ ७४—७६॥ जो जीवोंके इन्द्रियवर्गकी अधिष्ठात्री देवी एवं सब प्राणियोंमें सदा व्याप्त रहनेवाली हैं, उन व्याप्तिदेवीको बारंबार नमस्कार है॥ ७७॥

**चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत्।**
**नमस्तस्यै ॥ ७८ ॥ नमस्तस्यै ॥ ७९ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ८० ॥**
**स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-**
**त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।**
**करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी**
**शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥ ८१ ॥**
**या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै-**
**रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।**
**या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः**
**सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥ ८२ ॥**

*ऋषिरुवाच ॥ ८३ ॥*

**एवं स्तवादियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती।**
**स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृपनन्दन ॥ ८४ ॥**

---

जो देवी चैतन्यरूपसे इस सम्पूर्ण जगत्‌को व्याप्त करके स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है ॥ ७८—८० ॥ पूर्वकालमें अपने अभीष्टकी प्राप्ति होनेसे देवताओंने जिनकी स्तुति की तथा देवराज इन्द्रने बहुत दिनोंतक जिनका सेवन किया, वह कल्याणकी साधनभूता ईश्वरी हमारा कल्याण और मंगल करे तथा सारी आपत्तियोंका नाश कर डाले ॥ ८१ ॥ उद्दण्ड दैत्योंसे सताये हुए हम सभी देवता जिन परमेश्वरीको इस समय नमस्कार करते हैं तथा जो भक्तिसे विनम्र पुरुषोंद्वारा स्मरण की जानेपर तत्काल ही सम्पूर्ण विपत्तियोंका नाश कर देती हैं, वे जगदम्बा हमारा संकट दूर करें ॥ ८२ ॥

**ऋषि कहते हैं**—॥ ८३ ॥ राजन्! इस प्रकार जब देवता स्तुति कर रहे थे, उस समय पार्वतीदेवी गंगाजीके जलमें स्नान करनेके लिये वहाँ आयीं ॥ ८४ ॥

**साब्रवीत्तान् सुरान् सुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का।**
**शरीरकोशतश्चास्याः समुद्भूताब्रवीच्छिवा॥ ८५॥**
**स्तोत्रं ममैतत् क्रियते शुम्भदैत्यनिराकृतैः।**
**देवैः समेतैः[1] समरे निशुम्भेन पराजितैः॥ ८६॥**
**शरीरकोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या निःसृताम्बिका।**[2]
**कौशिकीति[3] समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते॥ ८७॥**
**तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाभूत्सापि पार्वती।**
**कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया॥ ८८॥**
**ततोऽम्बिकां परं रूपं बिभ्राणां सुमनोहरम्।**
**ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भनिशुम्भयोः॥ ८९॥**
**ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता अतीव सुमनोहरा।**
**काप्यास्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम्॥ ९०॥**

---

उन सुन्दर भौंहोंवाली भगवतीने देवताओंसे पूछा—'आपलोग यहाँ किसकी स्तुति करते हैं?' तब उन्हींके शरीरकोशसे प्रकट हुई शिवादेवी बोलीं—॥ ८५॥ 'शुम्भ दैत्यसे तिरस्कृत और युद्धमें निशुम्भसे पराजित हो यहाँ एकत्रित हुए ये समस्त देवता यह मेरी ही स्तुति कर रहे हैं'॥ ८६॥ पार्वतीजीके शरीरकोशसे अम्बिकाका प्रादुर्भाव हुआ था, इसलिये वे समस्त लोकोंमें 'कौशिकी' कही जाती हैं॥ ८७॥ कौशिकीके प्रकट होनेके बाद पार्वतीदेवीका शरीर काले रंगका हो गया, अतः वे हिमालयपर रहनेवाली कालिकादेवीके नामसे विख्यात हुईं॥ ८८॥ तदनन्तर शुम्भ-निशुम्भके भृत्य चण्ड-मुण्ड वहाँ आये और उन्होंने परम मनोहर रूप धारण करनेवाली अम्बिकादेवीको देखा॥ ८९॥ फिर वे शुम्भके पास जाकर बोले—'महाराज! एक अत्यन्त मनोहर स्त्री है, जो अपनी दिव्य कान्तिसे हिमालयको प्रकाशित कर रही है॥ ९०॥

---

१. पा०—समस्तैः। २. पा०—कोषा। ३. पा०—कौषिकी।

**नैव तादृक् क्वचिद्रूपं दृष्टं केनचिदुत्तमम्।**
**ज्ञायतां काप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरेश्वर॥ ९१॥**
**स्त्रीरत्नमतिचार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशस्त्विषा।**
**सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र तां भवान् द्रष्टुमर्हति॥ ९२॥**
**यानि रत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो।**
**त्रैलोक्ये तु समस्तानि साम्प्रतं भान्ति ते गृहे॥ ९३॥**
**ऐरावतः समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात्।**
**पारिजाततरुश्चायं तथैवोच्चैःश्रवा हयः॥ ९४॥**
**विमानं हंससंयुक्तमेतत्तिष्ठति तेऽङ्गणे।**
**रत्नभूतमिहानीतं यदासीद्वेधसोऽद्भुतम्॥ ९५॥**
**निधिरेष महापद्मः समानीतो धनेश्वरात्।**
**किञ्जल्किनीं ददौ चाब्धिर्मालामम्लानपङ्कजाम्॥ ९६॥**
**छत्रं ते वारुणं गेहे काञ्चनस्रावि तिष्ठति।**

---

वैसा उत्तम रूप कहीं किसीने भी नहीं देखा होगा। असुरेश्वर! पता लगाइये, वह देवी कौन है और उसे ले लीजिये॥ ९१॥ स्त्रियोंमें तो वह रत्न है, उसका प्रत्येक अंग बहुत ही सुन्दर है तथा वह अपने श्रीअंगोंकी प्रभासे सम्पूर्ण दिशाओंमें प्रकाश फैला रही है। दैत्यराज! अभी वह हिमालय-पर ही मौजूद है, आप उसे देख सकते हैं॥ ९२॥ प्रभो! तीनों लोकोंमें मणि, हाथी और घोड़े आदि जितने भी रत्न हैं, वे सब इस समय आपके घरमें शोभा पाते हैं॥ ९३॥ हाथियोंमें रत्नभूत ऐरावत, यह पारिजातका वृक्ष और यह उच्चैःश्रवा घोड़ा—यह सब आपने इन्द्रसे ले लिया है॥ ९४॥ हंसोंसे जुता हुआ यह विमान भी आपके आँगनमें शोभा पाता है। यह रत्नभूत अद्भुत विमान, जो पहले ब्रह्माजीके पास था, अब आपके यहाँ लाया गया है॥ ९५॥ यह महापद्म नामक निधि आप कुबेरसे छीन लाये हैं। समुद्रने भी आपको किंजल्किनी नामकी माला भेंट की है, जो केसरोंसे सुशोभित है और जिसके कमल कभी कुम्हलाते नहीं हैं॥ ९६॥ सुवर्णकी वर्षा करनेवाला

**तथायं स्यन्दनवरो यः पुराऽऽसीत्प्रजापतेः॥ ९७ ॥**
**मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम शक्तिरीश त्वया हृता।**
**पाशः सलिलराजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे॥ ९८ ॥**
**निशुम्भस्याब्धिजाताश्च समस्ता रत्नजातयः।**
**वह्निरपि[1] ददौ तुभ्यमग्निशौचे च वाससी॥ ९९ ॥**
**एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि ते।**
**स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते॥ १०० ॥**

*ऋषिरुवाच॥ १०१ ॥*

**निशम्येति वचः शुम्भः स तदा चण्डमुण्डयोः।**
**प्रेषयामास सुग्रीवं दूतं देव्या महासुरम्[2]॥ १०२ ॥**
**इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्मम।**
**यथा चाभ्येति सम्प्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु॥ १०३ ॥**

---

वरुणका छत्र भी आपके घरमें शोभा पाता है तथा यह श्रेष्ठ रथ, जो पहले प्रजापतिके अधिकारमें था, अब आपके पास मौजूद है॥ ९७॥ दैत्येश्वर! मृत्युकी उत्क्रान्तिदा नामवाली शक्ति भी आपने छीन ली है तथा वरुणका पाश और समुद्रमें होनेवाले सब प्रकारके रत्न आपके भाई निशुम्भके अधिकारमें हैं। अग्निने भी स्वतः शुद्ध किये हुए दो वस्त्र आपकी सेवामें अर्पित किये हैं॥ ९८-९९॥ दैत्यराज! इस प्रकार सभी रत्न आपने एकत्र कर लिये हैं। फिर जो यह स्त्रियोंमें रत्नरूप कल्याणमयी देवी है, इसे आप क्यों नहीं अपने अधिकारमें कर लेते?'॥ १००॥

**ऋषि कहते हैं—**॥ १०१॥ चण्ड-मुण्डका यह वचन सुनकर शुम्भने महादैत्य सुग्रीवको दूत बनाकर देवीके पास भेजा और कहा—'तुम मेरी आज्ञासे उसके सामने ये-ये बातें कहना और ऐसा उपाय करना, जिससे प्रसन्न होकर वह शीघ्र ही यहाँ आ जाय'॥ १०२-१०३॥

---

१. पा०—श्चापि। २. पा०—इसके बाद कहीं-कहीं 'शुम्भ उवाच' इतना अधिक पाठ है।

**स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्देशेऽतिशोभने।**
**सा[1] देवी तां ततः प्राह श्लक्ष्णं मधुरया गिरा॥ १०४॥**

*दूत उवाच॥ १०५॥*

**देवि दैत्येश्वरः शुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः।**
**दूतोऽहं प्रेषितस्तेन त्वत्सकाशमिहागतः॥ १०६॥**
**अव्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देवयोनिषु।**
**निर्जिताखिलदैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत्॥ १०७॥**
**मम त्रैलोक्यमखिलं मम देवा वशानुगाः।**
**यज्ञभागानहं सर्वानुपाश्नामि पृथक् पृथक्॥ १०८॥**
**त्रैलोक्ये वररत्नानि मम वश्यान्यशेषतः।**
**तथैव गजरत्नं[2] च हृत्वा[3] देवेन्द्रवाहनम्॥ १०९॥**
**क्षीरोदमथनोद्भूतमश्वरत्नं ममामरैः।**
**उच्चैःश्रवससंज्ञं तत्प्रणिपत्य समर्पितम्॥ ११०॥**

---

वह दूत पर्वतके अत्यन्त रमणीय प्रदेशमें, जहाँ देवी मौजूद थीं, गया और मधुर वाणीमें कोमल वचन बोला॥ १०४॥

**दूत बोला—**॥ १०५॥ देवि! दैत्यराज शुम्भ इस समय तीनों लोकोंके परमेश्वर हैं। मैं उन्हींका भेजा हुआ दूत हूँ और यहाँ तुम्हारे ही पास आया हूँ॥ १०६॥ उनकी आज्ञा सदा सब देवता एक स्वरसे मानते हैं। कोई उसका उल्लंघन नहीं कर सकता। वे सम्पूर्ण देवताओंको परास्त कर चुके हैं। उन्होंने तुम्हारे लिये जो संदेश दिया है, उसे सुनो—॥ १०७॥ 'सम्पूर्ण त्रिलोकी मेरे अधिकारमें है। देवता भी मेरी आज्ञाके अधीन चलते हैं। सम्पूर्ण यज्ञोंके भागोंको मैं ही पृथक्-पृथक् भोगता हूँ॥ १०८॥ तीनों लोकोंमें जितने श्रेष्ठ रत्न हैं, वे सब मेरे अधिकारमें हैं। देवराज इन्द्रका वाहन ऐरावत, जो हाथियोंमें रत्नके समान है, मैंने छीन लिया है॥ १०९॥ क्षीरसागरका मन्थन करनेसे जो अश्वरत्न उच्चैःश्रवा प्रकट हुआ था, उसे देवताओंने मेरे पैरोंपर पड़कर समर्पित किया है॥ ११०॥

---

१. पा०—तां च देवीं ततः। २.पा०—गजरत्नानि। ३. पा०—हृतं।

**यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषूरगेषु च।**
**रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने॥ १११॥**
**स्त्रीरत्नभूतां त्वां देवि लोके मन्यामहे वयम्।**
**सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम्॥ ११२॥**
**मां वा ममानुजं वापि निशुम्भमुरुविक्रमम्।**
**भज त्वं चञ्चलापाङ्गि रत्नभूतासि वै यतः॥ ११३॥**
**परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यसे मत्परिग्रहात्।**
**एतद् बुद्ध्या समालोच्य मत्परिग्रहतां व्रज॥ ११४॥**

*ऋषिरुवाच॥ ११५॥*

**इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तःस्मिता जगौ।**
**दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत्॥ ११६॥**

*देव्युवाच॥ ११७॥*

**सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किञ्चित्त्वयोदितम्।**

---

सुन्दरी! उनके सिवा और भी जितने रत्नभूत पदार्थ देवताओं, गन्धर्वों और नागोंके पास थे, वे सब मेरे ही पास आ गये हैं॥ १११॥ देवि! हमलोग तुम्हें संसारकी स्त्रियोंमें रत्न मानते हैं, अतः तुम हमारे पास आ जाओ; क्योंकि रत्नोंका उपभोग करनेवाले हम ही हैं॥ ११२॥ चंचल कटाक्षोंवाली सुन्दरी! तुम मेरी या मेरे भाई महापराक्रमी निशुम्भकी सेवामें आ जाओ; क्योंकि तुम रत्नस्वरूपा हो॥ ११३॥ मेरा वरण करनेसे तुम्हें तुलनारहित महान् ऐश्वर्यकी प्राप्ति होगी। अपनी बुद्धिसे यह विचारकर तुम मेरी पत्नी बन जाओ'॥ ११४॥

**ऋषि कहते हैं—**॥ ११५॥ दूतके यों कहनेपर कल्याणमयी भगवती दुर्गादेवी, जो इस जगत्को धारण करती हैं, मन-ही-मन गम्भीरभावसे मुसकरायीं और इस प्रकार बोलीं—॥ ११६॥

**देवीने कहा—**॥ ११७॥ दूत! तुमने सत्य कहा है, इसमें तनिक भी मिथ्या

**त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः॥ ११८॥**
**किं त्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तत्क्रियते कथम्।**
**श्रूयतामल्पबुद्धित्वात्प्रतिज्ञा या कृता पुरा॥ ११९॥**
**यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति।**
**यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति॥ १२०॥**
**तदागच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महासुरः।**
**मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु॥ १२१॥**

*दूत उवाच॥ १२२॥*

**अवलिप्तासि मैवं त्वं देवि ब्रूहि ममाग्रतः।**
**त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेदग्रे शुम्भनिशुम्भयोः॥ १२३॥**
**अन्येषामपि दैत्यानां सर्वे देवा न वै युधि।**
**तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि किं पुनः स्त्री त्वमेकिका॥ १२४॥**

---

नहीं है। शुम्भ तीनों लोकोंका स्वामी है और निशुम्भ भी उसीके समान पराक्रमी है॥ ११८॥ किंतु इस विषयमें मैंने जो प्रतिज्ञा कर ली है, उसे मिथ्या कैसे करूँ? मैंने अपनी अल्पबुद्धिके कारण पहलेसे जो प्रतिज्ञा कर रखी है, उसे सुनो— ॥ ११९॥ 'जो मुझे संग्राममें जीत लेगा, जो मेरे अभिमानको चूर्ण कर देगा तथा संसारमें जो मेरे समान बलवान् होगा, वही मेरा स्वामी होगा'॥ १२०॥ इसलिये शुम्भ अथवा महादैत्य निशुम्भ स्वयं ही यहाँ पधारें और मुझे जीतकर शीघ्र ही मेरा पाणिग्रहण कर लें, इसमें विलम्बकी क्या आवश्यकता है?॥ १२१॥

**दूत बोला—**॥ १२२॥ देवि! तुम घमंडमें भरी हो, मेरे सामने ऐसी बातें न करो। तीनों लोकोंमें कौन ऐसा पुरुष है, जो शुम्भ-निशुम्भके सामने खड़ा हो सके॥ १२३॥ देवि! अन्य दैत्योंके सामने भी सारे देवता युद्धमें नहीं ठहर सकते, फिर तुम अकेली स्त्री होकर कैसे ठहर सकती हो॥ १२४॥

**इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां न संयुगे।**
**शुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यसि सम्मुखम्॥ १२५॥**
**सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः।**
**केशाकर्षणनिर्धूतगौरवा मा गमिष्यसि॥ १२६॥**

*देव्युवाच॥ १२७॥*

**एवमेतद् बली शुम्भो निशुम्भश्चातिवीर्यवान्।**
**किं करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचिता पुरा॥ १२८॥**
**स त्वं गच्छ मयोक्तं ते यदेतत्सर्वमादृतः।**
**तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु तत्*॥ ॐ॥ १२९॥**

*इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये देव्या दूतसंवादो नाम पञ्चमोऽध्यायः॥ ५॥*

*उवाच ९, त्रिपान्मन्त्राः ६६, श्लोकाः ५४, एवम् १२९, एवमादितः ३८८॥*

---

जिन शुम्भ आदि दैत्योंके सामने इन्द्र आदि सब देवता भी युद्धमें खड़े नहीं हुए, उनके सामने तुम स्त्री होकर कैसे जाओगी॥ १२५॥ इसलिये तुम मेरे ही कहनेसे शुम्भ-निशुम्भके पास चली चलो। ऐसा करनेसे तुम्हारे गौरवकी रक्षा होगी; अन्यथा जब वे केश पकड़कर घसीटेंगे, तब तुम्हें अपनी प्रतिष्ठा खोकर जाना पड़ेगा॥ १२६॥

**देवीने कहा—**॥ १२७॥ तुम्हारा कहना ठीक है, शुम्भ बलवान् हैं और निशुम्भ भी बड़े पराक्रमी हैं; किंतु क्या करूँ? मैंने पहले बिना सोचे-समझे प्रतिज्ञा कर ली है॥ १२८॥ अतः अब तुम जाओ; मैंने तुमसे जो कुछ कहा है, वह सब दैत्यराजसे आदरपूर्वक कहना। फिर वे जो उचित जान पड़े, करें॥ १२९॥

*इस प्रकार श्रीमार्कण्डेयपुराणमें सावर्णिक मन्वन्तरकी कथाके अन्तर्गत देवीमाहात्म्यमें 'देवी-दूत-संवाद' नामक पाँचवाँ अध्याय पूरा हुआ॥ ५॥*

---

* पा०—यत्।